विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 01-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

कर्त्ता के ‘ ने ‘ चिन्ह की विभक्ति का प्रयोग कहाँ नहीं होता है:

i. **वर्तमान और भविष्य कालो की क्रियाओं में ‘ ने ‘ का प्रयोग नहीं होता है | जैसे - राम जाता है , राम खाएगा आदि |**
ii. **बकना, बोलना , ले जाना , भूलना , समझना , यद्यपि सकर्मक क्रियाएँ है तथापि इनकी उपर्युक्त भूतकालिक क्रियाओ के कर्त्ता के साथ ‘ ने ‘ चिन्ह का प्रयोग नहीं होता है | जैसे -**

वह गाली बका , वह बोला, वह मुझे भूला आदि |

iii. संयुक्त क्रिया का अंतिम खंड यदि सकर्मक हो तो उसके कर्त्ता के साथ ‘ ने ‘ का प्रयोग नही होता है | जैसे- मैं खा चुका |

2. कर्म

- जिस पर क्रिया का फल पड़े उसे कर्म कहते है | इसकी विभक्ति ‘ को ‘ है | जैसे - राम ने रावण को मारा | यहाँ ‘ रावण को ‘ कर्म है | कभी कभी यह अपने परस्पर के बिना भी आता है | जैसे - सीता फल खाती है , राम रोटी खाता है |

3. करण

- जिससे काम हो उसे करण कहते है | इसकी विभक्ति ‘ से ‘ है | जैसे - वह कलम से लिखता है |

4. सम्प्रदान

- जिसके लिए काम किया जाए उसे सम्प्रदान कहते है | इसकी विभक्ति ‘ को ‘ और ‘ के लिए ‘ है | जैसे -शिष्य ने अपने गुरु के लिए सब कुछ किया , गरीब को धन दीजिये आदि |

5. अपादान

- जिससे किसी वस्तु को अलग किया जाए उसे ‘ अपादान ‘ कहते है | इसकी विभक्ति ‘ से ‘ है | जैसे - वह अपने वर्ग से बाहर गया , पेड़ से पत्ते गिरे आदि |

6. संबंध

- जिससे किसी वस्तु का संबंध हो उसे संबंध कारक कहते है | इसकी विभक्ति ‘ का ‘ ‘की’ और ‘के’ है | जैसे - राम का घर , दिनेश की पुस्तक , गणेश के बेटे आदि | पुरुषवाचक सर्वनाम में ‘ ना’ ,’नी’,’ने’ तथा ‘री’,’रे’ का प्रयोग विभक्ति के रूप में होता है | जैसे - अपना बेटा , अपनी बेटी , अपने बेटे , मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरे बेटे आदि |

7. अधिकरण

- जिससे क्रिया का आधार जाना जाए उसे ‘ अधिकरण ‘ कहते है | इसकी विभक्ति ‘में’ और ‘पर’ है | जैसे - लड़की घोड़े पर बैठी | वह अपने घर में बैठा आदि |

8. सम्बोधन -

जिससे किसी को पुकारा या सम्बोधित किया जाए उसे सम्बोधन कहते है | इसकी विभक्ति 'अरे ' , 'हे ' आदि है | जैसे - अरे भाई ! , जल्दी जाओ ! , हे राम !, दया करो ! , कुछ लोग इसे कारक नहीं मानते |